200 करोड़ के निगम घोटाले पर हो रही लीपापोती

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) बीते करीब एक साल से 200 करोड़ के निगम घोटाले की फुटबॉल बना रखी है। न जाने सरकार किसको बेवकूफ़ समझती है और किसे बेबकूफ बनाना चाहती है। अंधे को भी दिखता है कि निगम आयुक्त की मर्जी एवं मिलीभगत के बगैर इतने बड़े-बड़े घोटाले नहीं हो सकते।

इस महत्वपूर्ण तथ्य के बावजूद अभी तक इस बात का तमाशा बना हुआ है कि निगमायुक्तों से पूछताछ की जाये या नहीं? अजीब कानून है कि बड़े चोर को पकड़ने के लिये सरकार की परमीशन की जरूरत पड़ती है। घोटाले से सम्बन्धित अभी तक छोटे-मोटे कर्मचारियों व ठेकेदारों की तो खूब अच्छी तरह विजिलेंस द्वारा धुनाई की जा चुकी है परन्तु घोटाले के असल जिम्मेदार कभी हाई कोर्ट तो कभी कानून की आड़ में छिपकर बैठे हैं। दरअसल ये कानून व हाईकोर्ट उन्हीं लोगों द्वारा बनाये गये हैं जो लोग खुलेआम डकैतियां डाल रहे हैं। वरना मतलब क्या है ऐसे कानून का जो घोटालेबाजों को संरक्षण देता हो। एक ओर तो कहा जाता है कि कानून सभी के लिये बराबर है। दूसरी ओर बड़े गुनाहगारों को बचने में भी यही कानून मदद करता नजर आता है।

दरअसल इस तरह के मोटे घोटाले जिसमें सैंकड़ों करोड़ के काम धरातल पर न होकर केवल फ़ाइलों में कर लिये गये हों, केवल निगमायुक्तों की मर्जी से नहीं हो सकते। शहर में विपक्ष के अतिरिक्त सत्ता पक्ष के विधायक सांसद एवं मंत्री भी मौजूद रहते हैं। मुख्यमंत्री भी कहीं और आये-जाये या नहीं परन्तु फ़रीदाबाद-गुड़गांव तो वे ऐसे आते-जाते रहते हैं मानो अपने घर के आंगन में टहल रहे हों। क्या इन सबको यह नहीं दिखाई दे रहा था कि काम के नाम पर निकलने वाला सैंकड़ों करोड़ रुपया आखिर जा कहां रहा है? सबको सब कुछ दिखता रहा है और सबने मिल-बांट कर जनता के इस धन को डकारा है। भेद खुल जाने के बाद अब जनता को बहलाने के लिये मुकदमे की नौटंकी की जा रही है। किसी से कोई बरामदगी होने वाली नहीं है। इतना ही नहीं नगर निगम में लूट कमाई का मोटा धंधा आज भी बरकरार है।

इस मोटे घोटाले के समय पर सोनल गोयल, मोहम्मद शाइन और अनीता यादव निगमायुक्त रहे हैं। ये तीनों ही आईएएस अधिकारी हैं। इन तीनों पर हाथ डालने की हिम्मत खट्टर का विजिलेंस विभाग नहीं कर पा रहा। अब खट्टर जी ने विजिलेंस विभाग का नाम बदल कर एंटी करप्शन ब्यूरो रख दिया है। नाम बदलने में माहिर इन भाजपाईयों से कोई पूछे कि इससे किसी के गुण स्वभाव में कोई परिवर्तन आ जाता है क्या? जो काम विजिलेंस विभाग नहीं कर सका तो क्या नाम बदले जाने के बाद वही विभाग अब कुछ ज्यादा बेहतर कर पायेगा? नाम बदले जाने के बावजूद भी विभाग का मुखिया तथा अन्य अधिकारी भी ज्यों के त्यों कायम हैं विभाग के मुखिया शत्रुजीत कपूर आगामी चार माह बाद हरियाणा पुलिस प्रमुख बनने की बाट जोह रहे हैं। ऐसे में वे वैसे ही नाच रहे हैं जैसे खट्टर जी नचा रहे हैं। ज्ञातव्य है कि इन तीनों आईएएस अफ़सरों को गिरफ्तार करने के लिये किसी परमीशन की आवश्यकता नहीं होती, आवश्यकता केवल मुकदमा चलाने के वक्त होती है।

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150

IFSC Code : UBIN0545112 Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लबगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल-बस अड्डा होडल - 9991742421

जो कौम अपने शहीदों का सम्मान नहीं कर सकती, उसे क्या खाक़ हक़ है आज़ाद होने का: शहीद-ए-आज़म भगतसिंह

सत्यवीर सिंह

82 साल पहले, 27 फरवरी के दिन, क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद शहीद हुए थे. कायर औपनिवेशिक लुटेरों ने उनके मृत शरीर को उनके परिवार अथवा उनके क्रांतिकारी कॉमरेडों को नहीं सौंपा बल्कि चुपचाप उनका अंतिम संस्कार, रसूलाबाद शव दाहगृह इलाहबाद में करने लगे। बात आंधी की तरह सब तरफ़ फैल गई। लोग उस जगह की ओर उमड़ पड़े, अँगरेज़ हुकूमत और उनके देसी गुर्गों ने भयंकर पुलिस बंदोबस्त किए थे कि कोई वहां ना पहुँच पाए लेकिन उस दिन कोई सुनने के मूड में नहीं था। उस भीड़ का नेतृत्व कर रही थीं, शचीन्द्रनाथ शान्याल की पत्नी और कॉमरेड प्रतिभा शान्याल। आंसुओं के बीच, रुंधे गले से उन्होंने वहां भाषण दिया कि अमर शहीद क्रांतिवीर, एचएसआरए के कमांडर इन चीफ की राख उससे भी ज्यादा इज्ज़त की हक़दार है जो अमर शहीद खुदीराम बोस के मृत शरीर को देश के लोगों ने दी थी।

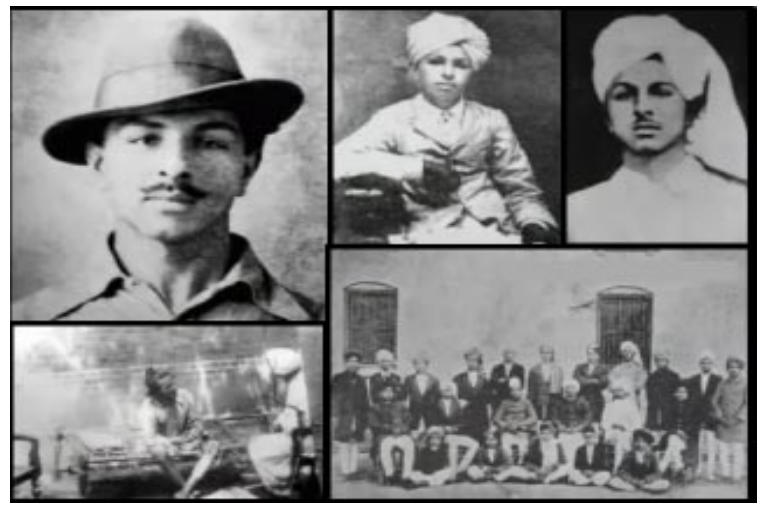

अमर शहीद क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद की शहादत के बाद उनकी माताजी जगरानी देवी ने बहुत बुरा वक़्त देखा, भयंकर कंगाली झेली। कोदो, मोटा चावल जिसे पशुओं को खिलाया जाता है, खाकर किसी तरह जीवित रहीं। बेरहम और बेमुरव्वत समाज में ऐसे लोग भी थे जो उन्हें एक भगोड़े की मां कहकर चिढ़ाते थे, वे भरे गले से वे जवाब देती थीं, उनके बेटे को भगोड़ा, इस देश को आज़ाद कराने के लिए बनना पड़ा था, उसे खुद के लिए कुछ नहीं चाहिए था।

अमर शहीद क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद को तहेदिल से सम्मान करने वाले, उनके कॉमरेड सदाशिव मलकापुरकर को जब इस बात का पता चला तो उनकी चीख निकल गई। वे तुरंत, अमर शहीद क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद के पैत्रक गाँव, मध्यप्रदेश के अलीराजपुर ज़िले के क़स्बे, भाभरा, जिसका नाम अब चंद्रशेखर आज़ाद नगर हो गया है, पहुंचे और श्रद्धेय जगरानी देवी को अपने साथ, झांसी स्थित अपने घर ले आए।

सदाशिव मलकापुरकर की मां उसी वक़्त मर चुकी थीं जब वे भुसावल बम कांड में अंडमान-निकोबार की जेल में बंद थे। उन्होंने श्रद्धेय जगरानी देवी को अपनी सगी मां से भी ज्यादा सम्मान दिया और सेवा की। सदाशिव मलकापुरकर के सर पर हाथ रखकर वे कहती थीं, मेरा चंदू वापस आ गया। 22 मार्च 1952 को, श्रद्धेय जगरानी देवी की मृत्यु पर क्रांतिकारी सदाशिव मलकापुरकर ने सगे बेटे की तरह उनका अंतिम संस्कार किया। कृपया याद रहे, शहीद-ए-आज़म भगतसिंह के दिल्ली असेंबली बम कांड में उनके कॉमरेड अमर क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त को 'आज़ादी' मिलने के बाद किस तरह ज़लील होना पड़ा था। एम्स में उनका इलाज और उनकी अंतिम इच्छा, कि उनका दाह संस्कार उनके कामरेडों शहीद-ए-आज़म भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के शहीद स्थल हुसैनीवाला फिरोज़पुर में किया जाए, शहीद-ए-आज़म की माताश्री श्रधेय विद्या देवी ने ही पूरी की थी।

पुलिस बिकाऊ हो तो....

पेज एक का शेष

कोई लड़का बोनट पर बैठा था तो कोई छत में से निकल रहा था तो कोई खिड़की में से झूल रहा था। सब लोग खूब जोर-जोर से हल्ला-गुल्ला करते, भय का माहौल बनाते हुए बड़ी बेफिक्री से राजमार्ग पर दौड़ रहे थे। उनकी ये खुलेआम हुड़दंगबाजी बे-रोक-टोक चलती रही। किसी पुलिस वाले ने उन्हें रोकने टोकने की जरूरत नहीं समझी। लोगों ने जब इसके वीडियो बना कर वायरल किये तो ट्रैफिक इंस्पेक्टर, एसएचओ दर्पण सिंह को भी इसका पता चला। पूछने पर वे कहते हैं कि हुड़दंगियों की वीडियो के आधार पर तलाश जारी है।

क्या यह पुलिस के लिये शर्मनाक नहीं है कि जनता वीडियो वायरल करे तो उन्हें पता चलता है कि सड़क पर हो क्या रहा है? क्या सड़कों पर तैनात भारी-भरकम अमला केवल वसूली करने के लिये ही पाल रखा है? चलो मान लिया कि वसूली भी एक महत्वपूर्ण काम है, लेकिन इसके साथ-साथ यदि थोड़ी बहुत ड्यूटी भी कर ली जाय तो क्या हर्ज है? सड़क पर हुई इस हुड़दंगबाजी के पीछे हुड़दंगियों का वह भरोसा है कि पुलिस से क्या डरना, पकड़े गये तो ले-दे कर छूट जायेंगे।

उनका यह भरोसा निराधार भी नहीं है। जनवरी के तीसरे सप्ताह में थाना सेंट्रल के इलाके में इसी तरह के हुड़दंगबाजी करते हुए जब स्कूली लड़के घूम रहे थे तो भी पुलिस ने उन्हें रोका-टोका नहीं था। उस वक्त भी लोगों द्वारा वीडियो वायरल किये जाने के बाद पुलिस ने कुछ गाड़ियों की पहचान करके उन्हें तलब तो जरूर किया था लेकिन कार्रवाई के नाम पर निल बटा सन्नाटा ही रहा। समझा जाता है कि पुलिस ने ले-दे कर मामले को निपटा दिया था। पुलिस का इसी तरह का रवैया हर तरह के अपराध करने वालों को प्रेरणा देता है।

यही हुड़दंगी चंडीगढ़ अथवा नई दिल्ली की किसी सड़क पर 100 मीटर तक तो हुड़दंगबाजी करके दिखायें, तुरन्त शिकंजे में कस दिये जायेंगे। वहां की पुलिस वीडियो वायरल होने का इंतजार एवं भरोसा नहीं करती। वे कम से कम इतना काम करना बखूबी जानते हैं।

घटना के दो दिन बाद एसएचओ ट्रैफिक दर्पण से इस बाबत पूछने पर उन्होंने बताया कि स्मार्ट सिटी द्वारा लगाये गये सीसीटीवी कैमरों से ऐसी कोई बात सामने नहीं आई।